गोदोहनम्

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» नाट्यांश का कथानक: लक्ष्य और समस्या

प्रश्न 1 (आसान). इस नाट्यांश में पात्रों का लक्ष्य क्या है?
उत्तर – मासान्त में पर्याप्त दूध एक बार में बेचकर लाभ/सम्पत्ति लेना।

प्रश्न 2 (आसान). मासान्त पर समस्या क्या आती है?
उत्तर – दोहन करते समय दूध की एक बूँद भी न मिलना।

प्रश्न 3 (मध्यम). कथानक में 'लाभ की जगह हानि' क्यों कहा गया है?
उत्तर – दैनिक काम को समय पर नहीं, बल्कि मासान्त तक जमा करके करने से लाभ के बजाय हानि हो जाती है।

प्रश्न 4 (कठिन). अगर लक्ष्य मासान्त में एक बार दूध बेचकर लाभ है, तो कहानी में वह 'टर्निंग पॉइंट' किस वाक्य-भाव से दिखता है? (भाव लिखो)
उत्तर – जैसे ही मासान्त पर दोहन की कोशिश करते हैं, दूध की एक बूँद भी नहीं मिलती–यही लक्ष्य टूटने का मोड़ है।

» मासपर्यन्त दुग्ध-दोहन में देरी = हानि

प्रश्न 5 (आसान). मासान्त पर पहली बार दोहन करने पर क्या मिलता है?
उत्तर – दुग्ध-बिन्दु भी नहीं मिलता।

प्रश्न 6 (आसान). दूध पाने की जगह क्या होता है?
उत्तर – धेनु के पाद-प्रहार से हानि।

प्रश्न 7 (मध्यम). पाठ का निष्कर्ष लिखो: दैनिक कार्य को कब करने पर लाभ नहीं होता?
उत्तर – जब दैनिक कार्य को मासपर्यन्त इकट्ठा करके किया जाए, तब लाभ की जगह हानि होती है।

प्रश्न 8 (कठिन). यदि किसी को लगता है कि महीने के अंत में एक साथ काम कर लेने से लाभ होगा, तो नाट्यांश इस सोच को कैसे गलत साबित करता है?
उत्तर – क्योंकि महीने के अंत तक दोहन में देरी करने पर दूध की एक बूँद भी नहीं मिलती और दूध पाने की जगह धेनु के प्रहारों से नुकसान होता है।

» चम्पा/मल्लिका का सह-परामर्श और गृह-व्यवस्था

प्रश्न 9 (आसान). मल्लिका सह-परामर्श करके गृह-व्यवस्था किस तरह तय करती है?
उत्तर – यात्रा/पूजा के दौरान भी घर का काम और धेनु की देखभाल नियमित रखने के लिए पहले से जिम्मेदारी/योजना तय करती है।

प्रश्न 10 (आसान). यह सह-परामर्श किस उद्देश्य से होता है?
उत्तर – जिम्मेदारी बाँटकर कार्य सुचारु और समय पर चलता रहे–यह सुनिश्चित करने के लिए।

प्रश्न 11 (मध्यम). जब कहा जाता है कि दूध-दोहन को एक खास समय पर करना है, तो इसका घर-व्यवस्था से क्या संबंध बनता है?
उत्तर – घर की दिनचर्या और धेनु की सेवा नियमित रहती है; इसलिए दूध-दोहन/लक्ष्य समय पर पूरा हो, यह व्यवस्था पहले से तय की जाती है।

प्रश्न 12 (कठिन). पिछले विचार (दूध-दोहन रोज़ का काम है) और इस अवधारणा (गृह-व्यवस्था व जिम्मेदारी) को जोड़कर समझाइए: मल्लिका का निर्णय किस तरह 'लाभ' के लिए है?

उत्तर – रोज़ काम टालने से नुकसान होता है–इसलिए मल्लिका/परिवार दिनचर्या और जिम्मेदारी को समझदारी से बाँटते हैं। जहाँ दूध दुहना टालना हो, वहाँ भी धेनु की सेवा नियमित रखते हैं ताकि अंत में लक्ष्य समय पर पूरा हो और काम बिगड़े नहीं।

» उचित समय का सिद्धान्त: 'अद्यैव विधीयताम्'

प्रश्न 13 (आसान). 'अद्यैव विधीयताम्' का भाव बताओ–काम किस दिन करना चाहिए?

उत्तर – जो काम आज का है, उसे आज ही (उसी दिन) करना चाहिए।

प्रश्न 14 (आसान). अगर दिन का काम उसी दिन नहीं किया जाए, तो सिद्धान्त के अनुसार क्या होगा?

उत्तर – कष्ट मिलेगा, लाभ नहीं होगा।

प्रश्न 15 (मध्यम). पाठ के अनुसार मासान्त पर दोहन करने से समस्या क्यों हुई?

उत्तर – काम का सही समय बीत गया और नियमित दोहन/देखभाल नहीं हुई, इसलिए धेनु ने दुग्ध नहीं दिया और नुकसान हुआ।

प्रश्न 16 (कठिन). पाठ में 'कार्यमद्यतनीयं यत् तदद्यैव विधीयताम्' और 'दिनस्य कार्यं तस्मिन्नेव दिने कर्तव्यम्'–दोनों का अर्थ समान है। लिखो कि दोनों मिलकर हमें क्या अनुशासन सिखाते हैं।

उत्तर – दोनों मिलकर यह सिखाते हैं कि निर्धारित समय के अंदर काम करना चाहिए; टालने से उल्टा परिणाम/कष्ट होता है, इसलिए आज ही सही तरीके से कार्य निपटाना चाहिए।

» घटरचना/जीविका: 'तद्रसं कालः पिबति' का भाव

प्रश्न 17 (आसान). 'तद्रसं कालः पिबति' में 'रस' का भाव क्या है?

उत्तर – उस कर्म का असली फल/लाभ/उपयोगिता

प्रश्न 18 (आसान). समय पर काम न हो तो लाभ पर क्या असर पड़ता है?

उत्तर – लाभ (रस) घटता है और कष्ट/घाटा बढ़ता है

प्रश्न 19 (मध्यम). 'आदान-प्रदान और कर्तव्य-कर्म' में समय क्यों जरूरी है?

उत्तर – क्योंकि इनके फल की "रस" समय पर ही मिलती है; समय निकलने पर लाभ घटता है

प्रश्न 20 (कठिन). अगर कोई कारीगर कहे–"घड़ा तो बन गया, फिर देर से बेचने पर क्या फर्क?"–तो 'तद्रसं कालः पिबति' के भाव से उसे क्या समझाओगे?

उत्तर – फर्क इसीलिए पड़ता है क्योंकि बनने के बाद भी बिक्री/उपयोग का समय गुजर गया तो असली लाभ (रस) नहीं मिलता; समय लाभ को अपने नियम से ले जाता है–इसलिए लाभ घटता है और घाटा/कष्ट संभव होता है

» अंतिम घटनाएँ: नाथ की सूचना और दोग्धुं प्रयास का कारण

प्रश्न 21 (आसान). मल्लिका नाथ/स्वामी को कौन-सी मुख्य बात बताती है?

उत्तर – मासपर्यन्तं धेनोः दोहनं न कृतम्।

प्रश्न 22 (आसान). उत्सव के दिन दोग्धुं प्रयास करने पर धेनु क्या करती है?

उत्तर – दोग्धुं अनुमति नहीं देती और ताडयति (पाद-प्रहार/विरोध) करती है।

प्रश्न 23 (मध्यम). मल्लिका क्यों समझती है कि धेनु दूधहीन हो गई थी?

उत्तर – क्योंकि शुरू से 'स्नेह/दुग्ध-व्यवस्था' का अभाव रहा और समय पर दोग्धुं व्यवस्था/कार्य नहीं हुआ।

प्रश्न 24 (कठिन). नाथ जवाब देते समय 'कार्यमद्यतनीयं' से क्या तर्क जोड़ता है?

उत्तर – वह बताता है कि जो काम आज का है उसे आज ही करना चाहिए; क्योंकि समय की उलटी गति/चूक से ध्रुवम् कष्ट मिलता है–यही यहाँ दूध न मिलना और दोग्धुं प्रयास का विफल होना कारण है।

» भाषा-अभ्यास: सन्धि/सन्धि-विच्छेद और प्रत्यय-आधारित रूप

प्रश्न 25 (आसान). "मनः-हरः" में सन्धि-विच्छेद लिखो।

उत्तर – मनः + हरः

प्रश्न 26 (आसान). अभ्यास के निर्देश "सन्धि/सन्धि-विच्छेद वा लिखत" का मतलब क्या है?

उत्तर – या तो शब्दों को जोड़कर सन्धि बनाओ, या जोड़ को तोड़कर अलग-अलग पद लिखो।

प्रश्न 27 (मध्यम). "तड्य$क्त्वा" जैसे पद में अंत का प्रत्यय बताओ।

उत्तर – -क्त्वा

प्रश्न 28 (कठिन). अगर प्रश्न कहे "प्रकृतिं प्रत्ययं च संयोज्य/विभज्य वा लिखत", तो उत्तर लिखते समय तुम्हें किस क्रम में लिखना चाहिए?

उत्तर – पहले प्रकृति/आधार पहचानो, फिर प्रत्यय पहचानो; फिर दोनों को जोड़कर (या अलग करके) पूरा रूप लिखो।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लो पात्रों ने लक्ष्य रखा कि पूरे महीने दूध-दोहन रोकेंगे और मासान्त में एक बार में पर्याप्त दूध बेचेंगे। लेकिन मासान्त में जब दोहन करते हैं तो दूध की एक बूँद भी नहीं मिलती। इस कथानक में लक्ष्य और समस्या लिखो, और हानि का कारण किस विचार से बताया गया है?

› लक्ष्य पहचानो: मासान्त में एक बार पर्याप्त दूध इकट्ठा करके बेचकर सम्पत्ति/लाभ लेना।

› समस्या पहचानो: मासान्त पर दोहन करते ही दूध की बूँद भी न मिलना।

› हानि का कारण: रोज़ का काम समय पर/नित्य करना चाहिए; काम को जमा करके करने से लाभ की जगह हानि होती है।

उत्तर – लक्ष्य: मासान्त में धेनु के शरीर में संचित पर्याप्त दूध को एक बार बेचकर लाभ/सम्पत्ति अर्जित करना। समस्या: मासान्त पर दोहन शुरू करने पर दूध की बूँद भी न मिलना। हानि का कारण: जो कार्य रोज़ करना चाहिए उसे मासान्त तक जमा करके करने पर लाभ की जगह हानि ही होती है।

उदाहरण 2. एक धेनु रोज़ दूध देती है। व्यक्ति ने दोहन रोज़ नहीं किया और केवल मासान्त पर जाकर पहली बार दोहन शुरू किया। इस स्थिति में परिणाम क्या होगा, और क्यों?

› रोज़ दुग्ध-दोहन का नियमित क्रम टूटता है।

› धेनु दुग्ध-बिन्दु देने की प्रक्रिया रोक देती है।

› पाठ के अनुसार मासान्त पर भी दूध की बूँद नहीं मिलती।

› दुग्ध-प्राप्ति की जगह धेनु के पाद-प्रहार से नुकसान होता है।

› अतः दैनिक कार्य को देरी से करने पर लाभ की जगह हानि होती है।

उत्तर – मासान्त पर पहली बार दोहन करने से दुग्ध-बिन्दु भी नहीं मिलेगा; दूध के बजाय धेनु के प्रहार से नुकसान होगा–इसलिए मासपर्यन्त देरी = हानि।

उदाहरण 3. गृह-व्यवस्था में मल्लिका और उसके परिवार का निर्णय क्या दिखाता है कि जिम्मेदारी बाँटने से काम सुचारु रहता है? (घटना-आधारित समझ लिखो: यात्रा/पूजा का कारण और धेनु की देखभाल का नियमित प्लान।)

› यात्रा/पूजा के कारण मल्लिका का घर से थोड़ी देर दूर रहना तय मानो।

› मल्लिका/परिवार आपस में सह-परामर्श करके तय करे कि गृह-व्यवस्था कौन संभालेगा।

› धेनु की देखभाल और दूध-दोहन/दूध-सुरक्षा का लक्ष्य समय के अनुसार तय करे।

› निर्णय का उद्देश्य समझो: कार्यों में देरी/गड़बड़ न हो, इसलिए नियमित देखभाल हो।

› अंत में लिखो कि इससे योजना टूटती नहीं, बल्कि सुचारु चलती है।

उत्तर – मल्लिका यात्रा/पूजा पर जाती है और सह-परामर्श के बाद निर्णय होता है कि गृह-व्यवस्था तथा धेनु की देखभाल नियमित ढंग से होगी। यानी जिम्मेदारी बाँटकर, समय और लक्ष्य के अनुसार काम तय किया जाता है–उसी से घर का काम सुचारु रहता है और धेनु के लिए भी उचित देखभाल/व्यवस्था बनी रहती है।

उदाहरण 4. माना मल्लिका और चन्दनन ने निर्णय लिया कि दुग्ध्दोहन महीनों भर बाद नहीं, बल्कि "मासान्त पर" एकदम करेंगे। बताओ–'अद्यैव विधीयताम्' सिद्धान्त के अनुसार उनका सही कदम क्या होना चाहिए था, और गलती का परिणाम क्या हुआ?

› समझो सिद्धान्त: जो काम आज/नियत समय के लिए है, उसे उसी दिन/उसी अवधि में करना चाहिए।

› धेनु से दुग्ध की नियमित उपलब्धता के लिए प्रतिदिन दोहन/देखभाल जरूरी थी।

› अगर दोहन को मासान्त तक रोक दिया, तो सही समय बीत गया।

› फिर जब दोहन शुरू किया, तब धेनु दुग्ध नहीं देती–और नुकसान/कष्ट होता है।

उत्तर – उचित कदम यह था कि दुग्ध्दोहन नियमित रूप से किया जाता, यानी नियत अवधि/हर दिन का काम हर दिन किया जाता; मासान्त तक रोकने से धेनु का व्यवहार बिगड़ता है और दुग्ध नहीं मिलता–इसलिए हानि/कष्ट होता है।

उदाहरण 5. एक कुम्भकार प्रतिदिन घड़े तैयार करके उन्हें उसी दिन बेचने की योजना बनाता है। अगर वह घड़े को समय पर सुखा कर बिक्री के लिए समय से पहले/ठीक समय पर नहीं ले जाता, तो उसकी जीविका पर क्या असर पड़ेगा? 'तद्रसं कालः पिबति' के भाव से कारण बताओ।

› पहले समझो 'कालः पिबति' का भाव: समय काम का लाभ अपने अनुसार तय करता है।

› 'तद्रसं' यानी उस घड़ा-निर्माण कर्म का असली फल–बिक्री का उचित दाम/लाभ।

› अगर घड़ा विलंब से तैयार हुआ, तो बिक्री का सही अवसर निकल जाता है।

› अवसर निकलने से घड़े की कीमत/मांग घटती है–यानी लाभ (रस) घट गया।

› इसीलिए श्लोक-भाव के अनुसार समय पर न होने से नुकसान/कष्ट बढ़ता है।

उत्तर – क्योंकि "तद्रसं कालः पिबति" है–देरी से बिक्री का अवसर निकल जाता है, मांग/दाम घटते हैं, इसलिए घड़ा बन जाने के बाद भी जीविका का असली लाभ कम मिलता है और घाटा/कष्ट होने की संभावना बढ़ जाती है।

उदाहरण 6. मल्लिका नाथ/चन्दन को जो सूचना देती है, उसके आधार पर बताओ: उत्सव के दिन दोग्धुं प्रयास करने पर धेनु क्यों नहीं देती और पाद-प्रहार/विरोध क्यों होता है?

› पहचानो कि यह प्रयास मासान्त/उत्सव के लिए है–यानी दूध की जरूरत जल्दी है।

› ध्यान दो कि धेनु अनुमति नहीं देती और दोहन शुरू होते ही ताडयति–यानी प्रक्रिया सफल नहीं होती।

› अब कारण समझो: मल्लिका बाद में कहती है कि शुरू से 'स्नेह/दुग्ध-व्यवस्था' का अभाव रहा। इसलिए धेनु दूधहीन हो गई।

› नाथ को सूचना स्पष्ट करती है कि "मासपर्यन्तं … दोहनं न कृतम्"–यानि महीने भर दोहन नहीं हुआ, तो दूध की स्थिति बिगड़ गई।

› निष्कर्ष लिखो: समय पर दुग्ध-व्यवस्था/कार्य न होने से धेनु दूधहीन रही, और इसलिए उत्सव के दिन दोग्धुं प्रयास पर विरोध हुआ।

उत्तर – धेनु दोहन की अनुमति नहीं देती क्योंकि शुरू से 'स्नेह/दुग्ध-व्यवस्था' का अभाव रहा और मासपर्यन्तं दोहनं न कृतम्–इस समय-चूक की वजह से धेनु दूधहीन हो गई, इसलिए उत्सव के दिन दोग्धुं प्रयास पर पाद-प्रहार/विरोध होता है।

उदाहरण 7. दिए गए रूप "दोग्धुम्" में प्रकृति (आधार) और प्रत्यय अलग करो तथा आवश्यक रूप-निर्माण दिखाओ।

› पहले प्रत्यय पहचानो: "दोग्धुम्" के अंत में "-तुम्" भाव मिलता है, और रूप-निर्माण के लिए इसे प्रत्यय मानोगे।

› अब प्रकृति पहचानो: "दोग्धुम्" में मूल धातु/आधार 'दोग्ध' से सम्बन्ध दिखता है–यह 'दुह्' (duh) धातु के रूप-आधार से जुड़ा माना जाएगा।

› अब संयोजन का भाव लिखो: धातु/प्रकृति + -तुम् 'करने के लिए/दुहने के लिए' प्रकार का रूप।

› अभ्यास के लिए निष्कर्ष साफ लिखो: प्रकृति = 'दुह्/दोग्ध-आधार' (जहाँ से 'दोग्ध' बनता है), प्रत्यय = 'तुम्'; मिला हुआ रूप = "दोग्धुम्".

उत्तर – प्रकृति/आधार: 'दुह्' से बना 'दोग्ध-' (दुह्/दोग्ध-आधार) और प्रत्यय: 'तुम्'; संयोजित रूप: "दोग्धुम्"।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- कथानक लिखते समय “लक्ष्य” और “समस्या” दोनों अलग-अलग जरूर लिखना।
- नाट्यांश से “दुग्ध-बिन्दु न मिलना” और “लाभ की जगह हानि” लाइन जरूर याद करो।
- NCERT/कक्षा 9 में कारण-उद्देश्य लिखना आता है: “जम्मिेदारी बाँटकर नयिमतिता बनाए रखना” जरूर लखिो।
- श्लोक के 2-3 वाक्य (कार्यमद्यतनीयं..., दिनस्य कार्यं..., कष्टं...) लिखकर भाव भी बताना।
- ‘तद्रसं’ को फल/लाभ समझकर ‘काल’ के प्रभाव वाला भाव लिखो—यही उत्तर की कुंजी है।
- कारण-श्रृंखला लिखो: समय-चूक + स्नेह/दुग्ध-व्यवस्था अभाव दूधहीनता विरोध।
- बोर्ड में अक्सर प्रकृति-प्रत्यय अलग लिखवाते हैं; सीधे अंतिम रूप न लिखकर विभाजन भी ज़रूर दो।

एक नज़र में रिवीज़न

› - लक्ष्य: मासान्त बिक्री, समस्या: दूध शून्य

› देरी = बूँद नहीं = प्रहार = हानि

› - सह-परामर्श: पहले तय, फिर जिम्मेदारी—घर-व्यवस्था सुचारु

› - आज का काम आज ही: ‘अद्यैव विधीयताम्’

› - ‘रस’ = फल/लाभ; देर लाभ घटे

› मासपर्यन्तं दोहनं न कृतम् धेनु दूधहीन ताडन।

› - सन्धि: जोड़/तोड़। प्रत्यय: -क्त्वा, -तुम् पहचानो।